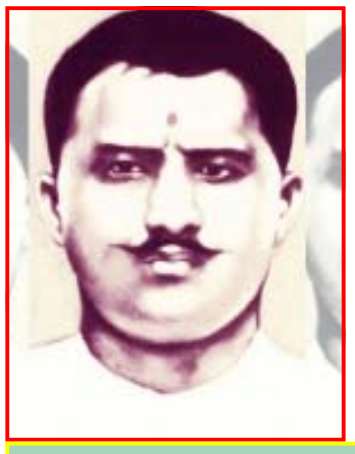

"सच्ची खोज अच्छी खबर"

ज्ञान सरोवर

R.N.I.Reg.No.MAHHIN/2009/27377 (हिन्दी साप्ताहिक) डाक पंजीकरण संख्या- MH/MR/North East/237/2012-14

वर्ा : 16 अंक : 22 (प्रत्येक गुरूवार) मुम्बई, 13 जून से 19 जून, 2024 पृठ : 8 मूल्य : 2.00 रूपये

पुणे के हिस्ट्रीशीटर के घर जाने पर विवादों में घिरे शरद पवार गुट के सांसद, अजित पवार गुट ने उठाए सवाल

पुणे। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) ने शरद पवार नीत पार्टी के अहमदनगर से नवनिर्वाचित सांसद निलेश ज्ञानदेव लंके के आपराधिक पृष्ठभूमि वाले पुणे के एक व्यक्ति के घर जाने पर राकांपा (सपा) की आलोचना की। कुछ महीने पहले एनसीपी अध्यक्ष और महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार के बेटे पार्थ पवार ने हिस्ट्रीशीटर गजानन मार्ने (जिसे गज्या मार्ने के नाम से भी जाना जाता है) के घर का दौरा करके विवाद खड़ा कर दिया था। उस बैठक के बारे में एनसीपी (एसपी) प्रवक्ताओं की श्चुप्पीश पर सवाल उठाया। मिटकरी ने कहा, ष्जब पार्थ पवार ने मार्ने से मुलाकात की थी, तब अजीत दादा ने निराशा व्यक्त की थी और कहा था कि इस मुलाकात को टाला जाना चाहिए था। लेकिन आज नीलेश लंके मार्ने से बहुत सम्मान के साथ मिल रहे हैं और उनकी बधाई स्वीकार कर रहे हैं। हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव में अहमदनगर सीट से नीलेश लंके ने भाजपा के उम्मीदवार सुजय विखे पाटिल को हराया। मिटकरी ने यह भी सवाल उठाया कि क्या एनसीपी (एसपी) ने अहमदनगर और बारामती लोकसभा सीटें जीतने के लिए अपराधियों की मदद ली है। उन्होंने कहा, ष्इस बात की जांच होनी चाहिए कि क्या एनसीपी (एसपी) को चुनावों में मार्ने का समर्थन मिला था। बारामती में शरद पवार की बेटी सुप्रिया सुले ने अजित पवार की पत्नी सुनेत्रा पवार को हराकर लगातार चौथी जीत दर्ज की है। एनसीपी (सपा) नेता रोहित पवार का नाम लिए बिना मिटकरी ने उस बचकाने नेता पर सवाल उठाया, जिन्होंने एनसीपी पर पुणे जिले के भोर में पीडीसीसी बैंक से जुड़े कदाचार का आरोप लगाया था और पूछा था कि 12 मई को बारामती में मतदान से एक दिन पहले यह बैंक आधी रात के बाद भी खुला क्यों रहा।

एकनाथ शिंदे ने चुनाव में मिले झटके के लिए 400 पार के नारे को ठहराया जिम्मेदार

नईदिल्ली(संवाद सूत्र)। क्या महाराष्ट्र में महायुति सरकार में शामिल घटक दलों के बीच सब कुछ ठीक चल रहा है? यह सवाल इसलिए उठा है क्योंकि लोकसभा चुनाव परिणामों में सत्तारुढ़ गठबंधन को तगड़ा झटका लगने और फिर केंद्रीय मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री पद नहीं मिलने से शिवसेना और एनसीपी की नाराजगी बार–बार बाहर आ रही है। हालांकि जब नरेंद्र मोदी को राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन संसदीय दल का नेता चुना जा रहा था तब शिवसेना अध्यक्ष और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा था कि यह फेविकोल का मजबूत जोड़ है जो टूटेगा नहीं लेकिन अब उन्होंने एक ऐसी बात कह दी है जिससे स्पष्ट हो रहा है कि महाराष्ट्र सरकार में अंदरूनी खींचतान चल रही है। हम आपको बता दें कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा है कि हालिया लोकसभा चुनाव में 400 पार के नारे के बाद लोगों के मन में संविधान बदलने और आरक्षण खत्म करने जैसी आशंका उत्पन्न हो गई। उल्लेखनीय है कि भारतीय जनता पार्टी ने राजग के घटक दलों के साथ मिलकर 400 से अधिक सीट जीतने का लक्ष्य रखा था। शिंदे ने मुंबई में कृषि लागत और मूल्य आयोग (सीएसीपी) की एक बैठक में कहा, "(विपक्ष द्वारा) झूठी कहानी गढ़े जाने के कारण हमें कुछ स्थानों पर नुकसान हुआ। हमें महाराष्ट्र में भी इसका खामियाजा भुगतना पड़ा।श्श उन्होंने कहा, "400 पार (नारे) के कारण लोगों को लगा कि भविष्य में संविधान बदलने और आरक्षण हटाने जैसे मुद्दों पर कुछ गड़बड़ हो सकती है।" उन्होंने कहा कि हम विपक्ष के आरोपों की काट नहीं कर पाये जिसका खामियाजा हमें भुगतना पड़ा है। उन्होंने यह भी कहा कि इस नारे के चलते भाजपा को कई राज्यों में नुकसान उठाना पड़ा है। शिंदे ने किसानों के मुद्दे पर कहा कि हम बेहद गंभीर हैं क्योंकि भारत कृषि प्रधान देश है। उन्होंने कहा कि अगर किसान नाखुश है तो अन्य लोग भी खुश नहीं रह सकते। उन्होंने कहा कि वह जल्द ही दिल्ली में केंद्रीय कृषि मंत्री से मुलाकात कर कुछ फसलों की एमएसपी के मुद्दे पर चर्चा करेंगे। हम आपको बता दें कि महाराष्ट्र में सत्तारुढ़ गठबंधन को खासतौर पर प्याज और सोयाबीन उगाने वाले किसानों की नाराजगी का खामियाजा उठाना पड़ा है। जहां तक शिंदे शिंदे की पार्टी शिवसेना की बात है तो उसने लोकसभा चुनाव में महाराष्ट्र की 49 सीटों में से सात सीटों पर जीत दर्ज की है। हम आपको याद दिला दें कि लोकसभा चुनावों के दौरान ही भाजपा के कुछ सांसदों और उम्मीदवारों ने सार्वजनिक रूप से कह दिया था कि हमें 400 सीटें संविधान बदलने के लिए चाहिए। हालांकि भाजपा ने इन टिप्पणियों की आलोचना करते हुए इससे दूरी बना ली थी लेकिन विपक्ष ने भाजपा के इन नेताओं के बयानों का हवाला देते हुए जनता के मन में निचले स्तर तक यह बात बिठा दी थी कि यदि एनडीए को 400 सीटें मिल गयीं तो संविधान बदल जायेगा और आरक्षण खत्म हो जायेगा। इस बीच, शिवसेना नेता संजय शिरसाट ने एक बड़ा बयान देते हुए कहा है कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने केंद्र में सत्तारुढ़ गठबंधन राजग को समर्थन देते समय भाजपा के समक्ष कोई मांग नहीं रखी थी, लेकिन पार्टी को फिर भी स्वतंत्र प्रभार वाला केंद्रीय मंत्रालय मिला। हालांकि शिरसाट ने केंद्रीय मंत्रिपरिषद में विभागों के आवंटन को लेकर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) या भाजपा–शिवसेना गठबंधन में किसी भी तरह के मतभेद से इंकार किया है। उन्होंने कहा कि गठबंधन होने पर मांग करना शिंदे का स्वभाव नहीं है। हम आपको बता दें कि शिरसाट ने यह टिप्पणी ऐसे समय में की है जब दो दिन पहले उनके पार्टी के सहयोगी और मावल से लोकसभा सदस्य श्रीरंग बारणे ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली नवगठित सरकार में शिवसेना को कैबिनेट में स्थान नहीं मिलने पर नाराजगी जताई थी। इस मुद्दे पर शिरसाट ने कहा कि बारणे का मानना था कि एक कैबिनेट और दो राज्य मंत्री पद से पार्टी के कुछ सांसदों को जगह मिल जाती, लेकिन सही समय पर उनकी मांग पूरी की जाएगी। हम आपको यह भी बता दें कि एनसीपी भी केंद्रीय मंत्रिमंडल में स्थान नहीं मिलने से नाराज है। हालांकि एनसीपी प्रमुख अजित पवार ने कहा है कि उनकी पार्टी का समर्थन एनडीए को जारी रहेगा लेकिन बताया जा रहा है कि एनसीपी के कई विधायक शरद पवार के संपर्क में हैं। महाराष्ट्र में चूंकि इसी साल अक्टूबर में विधानसभा के चुनाव होने हैं और लोकसभा चुनावों में शरद पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी का प्रदर्शन अच्छा रहा है इसलिए विधायक अपने सुरक्षित राजनीतिक भविष्य के लिए शरद पवार के संपर्क में बताये जा रहे हैं। इस तरह की भी खबरें हैं कि विधायकों द्वारा अजित पवार पर चाचा शरद पवार के पास वापस लौटने का दबाव भी बनाया जा रहा है। वहीं दूसरी ओर एनडीए की घटक महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना भी इस बात के लिए नाराज बताई जा रही है कि मोदी सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने का निमंत्रण राज ठाकरे को नहीं दिया गया। हम आपको बता दें कि चुनाव परिणाम के बाद देवेंद्र फडणवीस भी इस्तीफे की पेशकश कर चुके हैं हालांकि पार्टी ने उन्हें पद पर बने रहने को कहा है।

संघ प्रमुख भागवत ने भाजपा और मोदी को खरी खरी सुना कर क्या संदेश दिया है?

नरेंद्र मोदी ने तीसरी बार प्रधानमंत्री पद का कार्यभार संभाला तो देश–दुनिया से बधाई संदेश आने लगे लेकिन भारतीय जनता पार्टी के मातृ संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुखिया मोहन भागवत ने इसी बीच मोदी सरकार और भाजपा को जिस तरह खरी–खरी सुनाई उससे सब आश्चर्यचकित हैं। हालांकि विपक्ष ने भागवत की टिप्पणियों का स्वागत किया है। देखा जाये तो मणिपुर की अशांति को लेकर भाजपा की चुप्पी पर मोहन भागवत ने जो कुछ कहा है वह एनडीए सरकार के लिए बड़ी चेतावनी की तरह है। मणिपुर में अब भी जिस तरह से हालात तनावपूर्ण बने हुए हैं उसको देखते हुए कहा जा सकता है कि वहां के मुद्दे हल करने में केंद्र और राज्य सरकार नाकाम रही हैं। इसके अलावा, आरएसएस प्रमुख ने अपने संबोधन के जरिये जिस तरह के तेवर दिखाये हैं उससे प्रदर्शित हो रहा है कि इस बार स्पष्ट बहुमत से दूर रही भाजपा को सिर्फ अपने गठबंधन सहयोगियों को ही साथ लेकर नहीं चलना होगा बल्कि संघ परिवार के लोगों को भी साथ लेकर चलना होगा। आरएसएस के कई पदाधिकारी इस बात को स्वीकार रहे हैं कि चुनावों से पहले भाजपा ने अति आत्मविश्वास के साथ श्अबकी बार 400 पारश का नारा लगाना शुरू किया था तब संघ परिवार के लोगों ने उन्हें जमीन पर रह कर काम करने की सलाह दी थी लेकिन पार्टी के नेताओं को श्मोदी है तो मुमकिन हैश नारे पर इतना भरोसा हो गया था कि उन्होंने किसी की नहीं सुनी और आखिरकार मुंह की खानी पड़ी। देखा जाये तो लगभग ऐसी ही स्थिति साल 2004 के लोकसभा चुनावों के दौरान भी हुई थी जब भाजपा के नेता इंडिया शाइनिंग के नारे पर इतना भरोसा कर रहे थे कि उन्होंने जमीनी कार्यकर्ताओं की अनदेखी कर दी थी। रही सही कसर भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के कथित तौर पर आरएसएस के बारे में दिये गये बयान से पूरी हो गयी थी। चुनावों के बीच ही आरएसएस कार्यकर्ताओं ने जिस तरह भाजपा से दूरी बना ली थी उससे पार्टी के चुनावी प्रदर्शन पर बुरा असर पड़ा। संघ प्रमुख मोहन भागवत ने जिस तरह इशारों इशारों में भाजपा की कार्यशैली पर सवाल उठाये हैं उससे यह भी संकेत मिल रहे हैं कि भाजपा के नये अध्यक्ष के चयन में अब नागपुर की ज्यादा चलेगी। हम आपको याद दिला दें कि 2009 के लोकसभा चुनावों में भाजपा की हार के बाद भागवत की पहल पर ही नितिन गडकरी को नागपुर से दिल्ली भेजा गया था ताकि वह पार्टी को संभालें। उस समय भाजपा में लालकृष्ण आडवाणी, राजनाथ सिंह, सुषमा स्वराज और अनंत कुमार जैसे नेता दिल्ली की राजनीति में प्रभावी थे लेकिन सबको दरकिनार कर गडकरी को लाया गया था। जहां तक मोहन भागवत के संबोधन की बात है तो आपको बता दें कि एक तो उन्होंने मणिपुर में एक वर्ष बाद भी शांति स्थापित नहीं होने पर चिंता जताई है साथ ही देश के सभी समुदायों के बीच एकता पर जोर दिया है। आरएसएस प्रमुख ने साथ ही चुनावी बयानबाजी से बाहर आकर देश के सामने मौजूद समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत पर भी जोर दिया है। लोकसभा चुनाव परिणाम के बाद अपनी पहली टिप्पणी में भागवत ने कहा है कि नतीजे आ चुके हैं और सरकार बन चुकी है, इसलिए क्या और कैसे हुआ आदि पर अनावश्यक चर्चा से बचना चाहिए। भाजपा की सीटें घटने की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा कि आरएसएस ''कैसे हुआ, क्या हुआ'' जैसी चर्चाओं में शामिल नहीं होता है। उन्होंने कहा कि संगठन केवल मतदान की आवश्यकता के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने का अपना कर्तव्य निभाता है। इसके अलावा, सत्ता पक्ष और विपक्ष के संबंधों में जिस तरह की खटास हाल के वर्षों में देखने को मिली है उस ओर इशारा करते हुए भागवत ने सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच आम सहमति की आवश्यकता पर जोर दिया है ताकि आम जनता के लिए काम किया जा सके। भागवत ने स्पष्ट कहा है कि चुनाव बहुमत हासिल करने के लिए होते हैं और यह एक प्रतिस्पर्धा है, युद्ध नहीं। उन्होंने विपक्ष को विरोधी कहने की बजाय प्रतिपक्ष नाम से पुकारने का सुझाव भी दिया है। भागवत का यह कहना भी महत्वपूर्ण है कि राजनीतिक दल और नेता एक–दूसरे की बुराई कर रहे हैं, लेकिन वे इस बात पर ध्यान नहीं दे रहे हैं कि इससे समुदायों के बीच दरार पैदा हो सकती है। भागवत का इस बात पर अफसोस जताना भी स्वाभाविक ही था कि आरएसएस को बिना किसी कारण राजनीतिक विवादों में घसीटा जाता है। दूसरी ओर, भले इस बार का लोकसभा चुनाव बिना किसी विघ्न के संपन्न हुआ लेकिन इस बार के लोकसभा चुनावों में मिथ्या प्रचार और अफवाहों का बाजार खूब देखने को मिला। इस ओर भी इशारा करते हुए आरएसएस प्रमुख ने कहा है कि चुनाव में हमेशा दो पक्ष होते हैं, लेकिन जीतने के लिए झूठ का सहारा नहीं लिया जाना चाहिए। उन्होंने परोक्ष तौर पर डीपफेक आदि की ओर इशारा करते हुए यह भी कहा कि तकनीक का उपयोग करके झूठ फैलाया गया। हम आपको याद दिला दें कि चुनावों के बीच ही गृह मंत्री अमित शाह का आरक्षण के बारे में विवादित बयान वाला डीपफेक वीडियो जारी किया गया था जिसे कांग्रेस के कई बड़े नेताओं ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर साझा भी कर दिया था। इसके अलावा, भागवत ने देश की विविधता का सम्मान करते हुए आगे बढ़ने की नसीहत देते हुए यह भी कहा कि एक दूसरे की उपासना पद्धति का सम्मान किया जाना चाहिए। भागवत का यह कहना भी महत्वपूर्ण है कि इस्लाम और ईसाई जैसे धर्मों की अच्छाई और मानवता को अपनाया जाना चाहिए और सभी धर्मों के अनुयायियों को एक–दूसरे का भाई–बहन के रूप में सम्मान करना चाहिए। देखा जाये तो भागवत की यह नसीहत उन लोगों के लिए खासतौर पर है जो टीवी की बहसों और सोशल मीडिया पर अपनी टिप्पणियों में धर्म विशेष को निशाना बनाते हैं। यकीनन ऐसे लोगों के चलते ही समुदायों के बीच अविश्वास बढ़ता है। इसके अलावा, जो लोग बात–बात पर दूसरों को देश छोड़कर कहीं ओर बस जाने की सलाह देते हैं, उनकी ओर इशारा करते हुए भागवत ने कहा है कि सभी को यह मानकर आगे बढ़ना चाहिए कि यह देश हमारा है और इस भूमि पर जन्म लेने वाले सभी लोग हमारे अपने हैं। आरएसएस प्रमुख ने इस बात पर जोर दिया है कि कुछ लोगों की यह सोच कि केवल विदेशी विचारधाराएं ही सत्य हैं, समाप्त होनी चाहिए। संघ प्रमुख मोहन भागवत ने अतीत की बातों को भूलने और सबको अपनाने की सीख दी है। साथ ही उन्होंने जातिवाद को पूरी तरह से खत्म करने का आह्वान करते हुए अपने संगठन के पदाधिकारियों से समाज में सामाजिक सद्भाव की दिशा में काम करने के लिए कहा है। बहरहाल, संघ प्रमुख के नागपुर में दिये गये संबोधन को लेकर जिस तरह की राजनीतिक प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं वह दर्शा रही हैं कि प्रतिपक्ष को भाजपा पर वार करने के लिए नया हथियार मिल गया है। खैर...पहले ही चुनावी नतीजों से परेशान दिख रही भाजपा यदि भागवत की नसीहत पर तत्काल प्रभाव से अमल करे तो यकीनन वह जल्द ही निराशा के भंवर से उबर सकती है।

उत्तर कोरियाई सैनिकों की इस हरकत पर भड़का दक्षिण कोरिया, सीमा पर हुई ताबड़तोड़ फायरिंग

सियोल । दक्षिण कोरिया और उत्तर कोरिया के बीच तनातनी जगजाहिर है। उत्तर कोरिया की तरफ से लगातार इस तरह की हरकतें की जाती रही हैं जो दक्षिण कोरिया के लिए परेशानी का सबब बनती रही हैं। हाल ही में उत्तर कोरिया की तरफ से दक्षिण कोरिया में कचरों से भरे गुब्बारे गिराए गए थे जिसके बाद से दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ गया है। अब खबर आ रही है कि दक्षिण कोरियाई सैनिकों ने उत्तर कोरिया के जवानों पर गोलियां चलाई हैं। जानकारी के मुताबिक इस सप्ताह की शुरूआत में उत्तर कोरिया के सैनिकों जमीनी सीमा पार की थी जिसके बाद दक्षिण कोरिया की ओर से फायरिंग की गई थी। सीमा पर हुई फायरिंग की जानकारी दक्षिण कोरिया की सेना ने मंगलवार को दी है। दोनों देशों के बीच अक्सर रक्तपात और हिंसक झड़पें होती रहती हैं। दोनों कोरियाई देशों के आपस में बढ़ते तनाव के बीच रविवार को यह घटना हुई। पर्यवेक्षकों का कहना है कि यह घटना ज्यादा तूल नहीं पकड़ेगी क्योंकि दक्षिण कोरिया का मानना है कि उत्तर कोरियाई सैनिकों ने जानबूझकर सीमा में घुसपैठ नहीं की और ना ही उत्तर कोरिया ने जवाब में गोलियां चलाईं। दक्षिण कोरिया के ज्वाइंट चीफ ऑफ स्टाफ ने बताया कि रविवार दोपहर साढ़े 12 बजे उत्तर कोरिया के कुछ सैनिक दोनों देशों को अलग करने वाली सैन्य सीमा को पार कर उसके अधिकार क्षेत्र में घुस आए। उन्होंने बताया कि इन उत्तर कोरियाई सैनिकों के पास निर्माण उपकरण ?थे जबकि कुछ सैनिकों के पास हथियार भी थे। हालांकि, दक्षिण कोरियाई सेना द्वारा चेतावनी के तौर पर गोलियां चलाए जाने के बाद वो तुरंत अपने क्षेत्र में लौट गए। उन्होंने बताया कि उत्तर कोरिया ने कोई अन्य संदिग्ध गतिविधियां नहीं की। ज्वाइंट चीफ ऑफ स्टाफ के प्रवक्ता ली सुंग जून ने संवाददाताओं को बताया कि दक्षिण कोरिया की सेना ने आकलन किया कि ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तर कोरियाई सैनिकों ने जानबूझकर सीमा पार नहीं की क्योंकि घटनास्थल एक जंगली क्षेत्र है और वहां सैन्य सीमांकन रेखा होने के संकेत भी स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहे थे। ली ने अधिक विवरण नहीं दिया लेकिन दक्षिण कोरियाई मीडिया की खबरों में बताया गया कि लगभग 20 से 30 उत्तर कोरियाई सैनिक दक्षिण कोरियाई क्षेत्र में लगभग 50 मीटर की दूरी तक घुस आए थे और संभवतरू वो अपना रास्ता भटक गए थे। खबरों के मुताबिक, अधिकांश सैनिकों के पास कुदाल और अन्य निर्माण उपकरण थे।

राष्ट्रपति पदक विजेता दत्तात्रय खंडागले का सम्मान

मुंबई। भांडुप पुलिस स्टेशन के वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक दत्तात्रय खंडागले को पुलिस विभाग में उल्लेखनीय कार्य हेतु इस वर्ष राष्ट्रपति पदक से नवाजा गया। यह पुरस्कार (पदक) महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम रमेश बैस के शुभ हस्तों उन्हें राजभवन,मुंबई पर आयोजित समारोह में प्रदान किया गया।

उनकी उपलब्धि पर युवाब्रिगेड एसोसिएशन मुंबई के अध्यक्ष डॉ.सचिन सिंह एवम समाज सेवी शैलेश यादव ने पुष्प गुच्छ प्रदान कर दत्तात्रय खंडागले को शुभकामनायें दिया।

बॉन्ड से 30,000 करोड़ रुपये जुटाएगी नाबार्ड

नईदिल्ली। राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) चालू वित्त वर्ष 2025 में बॉन्ड के माध्यम से 30,000 करोड़ रुपये तक जुटाने की योजना बना रहा है ताकि ऋण देने के कार्यों में मदद की जा सके। यह जानकारी रेटिंग एजेंसी क्रिसिल ने दी है। बाजार के माध्यम से जुटाई गई पूंजी में बॉन्ड और मुद्रा बाजार से जुड़ी योजनाएं आदि शामिल हैं और मार्च 2024 के अंत में नाबार्ड की कुल उधारी में इनकी लगभग 51.5 प्रतिशत की हिस्सेदारी थी। क्रिसिल के आकलन के अनुसार, सरकारी स्वामित्व वाले विकास वित्तीय संस्थान (डीएफआई) की कुल उधारी मार्च 2024 तक 7,89,191 करोड़ रुपये थी। क्रिसिल ने प्रस्तावित बॉन्ड पेशकश को श्एएए्च की रेटिंग दी है जिसे भारत सरकार का समर्थन है। नाबार्ड ने बिज़नेस स्टैंडर्ड के सवालों का जवाब नहीं दिया। वित्त वर्ष 2024 के बैलेंसशीट के मुताबिक बकाया बॉन्ड और डिबेंचर, मार्च 2024 में 2,86,150 करोड़ रुपये था जो एक साल पहले के 2,46,677 करोड़ रुपये से अधिक था। इस प्रकार, डिबेंचर व बॉन्ड के माध्यम से शुद्ध उधारी वित्त वर्ष 2024 में 39,473 करोड़ रुपये बढ़ी।

मुंबई में आसमान से बरसी आफत, मानसून की पहली बारिश में ही सड़कें बनीं सैलाब, दो की मौत

मुंबई। मध्य भारत में अब मानसून अपनी पकड़ बढ़ा रहा है. यही कारण है कि कई इलाकों में बीते कुछ घंटों में जोरदार बारिश हुई है. महाराष्ट्र भी इन्हीं मे से एक है. जहां के कई क्षेत्रों में बीते 24 घंटे में मूसलाधार बारिश ने जनजीवन पर सीधा असर डाला है. खास तौर पर माया नगरी मुबई में तो आसमान से आफत ही बरस पड़ी है. मुंबई और इसके आस–पास के इलाकों में आई भारी बारिश ने लोगों की परेशानियां बढ़ा दी हैं. यही नहीं सड़कें जहां सैलाब में तब्दील हो गई हैं वहीं इस मूसलाधार बारिश के चलते दो लोगों ने अपनी जान भी गंवा दी है. मुंबई में तेज बारिश की वजह से कई रास्तों में सड़कों पर घुटनों तक पानी जमा हो गया है. ऐसे में लोगों को आने–जाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है. कई क्षेत्रों में गाड़ियां ही पानी में तैरती नजर आ रही हैं. विक्रोली की बात करें तो यहां पर मूसलाधार बारिश का सबसे ज्यादा असर देखने को मिला है. बारिश के कारण यहां एक स्लैब ही गिर गया. जिसके नीचे दबने से दो लोगों की मौत हो गई. खास बात यह है कि मरने वालों में 10 वर्ष का एक बच्चा भी शामिल है. मुंबई से सटे इलाकों में भी भारी बारिश का असर देखने को मिला है. पालघर में सड़क का एक हिस्सा ही धंस गया खास बात यह है कि इस हिस्से के धंसने की वजह से मुंबई–अहमदाबाद राजमार्ग करीब 4 घंटे तक प्रभावित रहा. इसकी वजह से पाइपलाइन भी फूट गई जिसकी मरम्मत में भी कर्मियों को काफी वक्त लगा. पालघर में कई घंटों तक लोगों को ट्रैफिक जाम की स्थिति से भी जूझना पड़ा. रविवार की बारिश का सीधा असर हफ्ते के पहले दिन यानी सोमवार 10 जून को भी देखने को मिला. भागती दौड़ती मुंबई की रफ्तार धीमी हो गई. सड़कों पर जल जमाव के चलते कई वाहन रेंगते हुए नजर आए. वहीं ठाणे, नासिक, छत्रपति संभाजीनगर, अहमदनगर, सतारा और जलगांव जैसे महाराष्ट्र के इलाकों में भारी बारिश की वजह से जनजीवन अस्तव्यस्त हो गया है।

शिवबाबा से योग लगाने से आत्मा और शरीर को फायदा

1) आत्मा, शिवबाबा के साथ योग लगाकर बुध्दी तेज और विकर्म विनाश होते जायेंगे!

2) आत्मा, शिवबाबा के साथ योग लगाकर शरीर की आयु तथा उर्जा बढ़ेगी !

3) आत्मा, शिवबाबा के साथ योग लगाकर पावन तथा शक्तिशाली होती जायेंगी!

4) आत्मा, शिवबाबा के साथ योग लगाकर शरीर के कर्मभोग चूक्त कर सदा हल्का लाईट बन जायेंगे!

5) आत्मा, शिवबाबा के साथ योग लगाकर गुण और शक्तियों से भरपूर हो संपूर्ण संपन्नता आ जायेंगी!

6) आत्मा, शिवबाबा के साथ योग लगाकर मेहनत से मुक्त बन मोहब्बत के झूले में झूलती है!

7) आत्मा, शिवबाबा के साथ योग लगाकर हर समस्याओं का समाधान मिलता है तो प्रसन्नता आ जाती है!

8) आत्मा, शिवबाबा के साथ योग लगाकर बाबा के टचिंग को तुरंत परख कर कॅचिंग पावर आती है!

10) आत्मा, शिवबाबा के साथ योग लगाकर देह के संबंध को भूलकर बाबा के साथ सर्व संबंध जुड जाते है!

11) आत्मा, शिवबाबा के साथ योग लगाकर अपने स्वभाव–संस्कार को चेंज कर दैवीगुणी बनते है!

12) आत्मा, शिवबाबा के साथ योग लगाकर स्वयम् में एकाग्रता आती है!

13) आत्मा, शिवबाबा के साथ योग लगाकर अलौकिक प्रेम तथा आनंद मिलता है!

14) आत्मा, शिवबाबा के साथ योग लगाकर सर्व शक्तीयोंका खजिना जमा होता है!

15) आत्मा, शिवबाबा के साथ योग लगाकर वाणी से परें वानप्रस्थ बनते है!

परमात्मा की वाई–फाई इतनी हाई–फाई है कि. जहां भी ध्यान करो नेटवर्क मिल ही जाता है..!!

मनुष्य की सोच हमसे मिले यह संभव नहीं है,पर हम उन्हें उनकी सोच के साथ स्वीकार करें, यही हमारी सही पहचान होती है, आज से हम,सबकी सोच की कदर करें जी!

कटुता वहां उत्पन्न होती है,जहां हम स्वार्थ के लिए जुड़ते हैं.प्यार वहां पनपता है,जहां हम निस्वार्थ भाव से जुड़ते हैं..... !!–

जिस प्रकार श्वास.आपके शरीर को चलाता है.उसी प्रकार विश्वास आपके संबन्ध को चलाता है,रिश्तों की चाय में शक्कर जरा नाप कर ही रखियेगा.फीकी हुई तो मजा नहीं आएगा और ज्यादा हो तो मन भर जाएगा...!!

जितना हो सके, खामोश,रहना ही अच्छा हैं,क्योंकि,सबसे ज्यादा गुनाह इंसान,से जुबान ही करवाती है!

जलेबी सिर्फ़ मीठी ही नहीं एक महत्वपूर्ण संदेश से परिपूर्ण है,खुद कितने भी उलझे रहो पर दूसरो को हमेशा मिठास दो.

जो लोग आपका वक्त देख, कर इज्ज़त दें वो आपके अपने कभी नहीं हो सकते क्योंकि वक्त देखकर मतलब पूरे किए जाते हैं रिश्ते नहीं निभाए जाते हैं

सत्य के द्वारा धर्म की रक्षा होती है, विद्या की रक्षा अभ्यास से होती है। रूप की रक्षा स्वच्छता से होती है और कुल की रक्षा मनुष्य के चरित्र से होती है।

छोटी सी जिंदगी है,हंस कर जियो,क्योंकि,लौटकर सिर्फ यादे,आती वक्त नहीं

जीवन में जब भी,उलझनें बढ़ने लगें तो,खुद को थोडा ढील दें, क्योंकि. गांठ खोलने का यही तरीका बेहतरीन है.!

अपने सपनों को जीना है तो पहले एक मजबूत इंसान बनो क्योंकि वक्त आपको हजारों बार तोड़ने की कोशिश करता हैं।

सफलता के बाद लोगों से मिली,हुई ढेरों प्रशंसा से कहीं,अधिक बेहतर संघर्ष के,दौरान सच्चे हितैषी द्वारा,मिला हुआ प्रोत्साहन होता है।

श्री शिवाय नमस्तुभ्यं

नमः शिवाय

सुप्रभात

आपका दिन शुभ मंगल मय हो

ऊँ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धन उर्वारुकमिव वन्धानान् मृत्योर्मुक्षीय माम्रतात्

कर्पूरगौरं करुणतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारं! सदावसंतं हृदयारविदं भवंभवानी सहितं नमामि!!

प्रियजन आप एवं आपके परिवार पर भगवान भोलेनाथ जी की कृपा सदा बनी रहे

जय श्री कृष्ण

राधे राधे जी

सम्पादकीय...

बच्चों की सुरक्षा को लेकर सवालिया निशान

हाल में दिल्ली में बेबी केयर सेंटर में आग लगने से जो हादसा हुआ, उससे नर्सिंग होम और बेबी केयर सेंटर्स में बच्चों की सुरक्षा को लेकर सवालिया निशान लग गए हैं। इस हादसे के बाद जांच में बहुत सारी खामियां मिल रही हैं। बेबी केयर सेंटर नर्सिंग होम के पंजीकरण पर संचालित किया जा रहा था और इसका लाइसेंस भी 31 मार्च, 2024 को समाप्त हो चुका था। इसका रिन्यूअल नहीं कराया गया था। मौके पर आग बुझाने का कोई भी उपकरण मौजूद नहीं था और न ही किसी फायर फाइटिंग सिस्टम को लगाने का प्रयास किया गया था। आपातकालीन स्थिति में इमारत से बाहर निकलने के लिए कोई दूसरा रास्ता भी नहीं था। इस घटना ने लोगों को दिल्ली में संचालित अन्य निजी नर्सिंग होम, बेबी केयर सेंटर, निजी क्लिनिक और अस्पतालों की सुरक्षा व्यवस्थाओं के बारे में सोचने के लिए मजबूर कर दिया है। इन अस्पतालों और नर्सिंग होम को चलाने के लिए किन नियमों का पालन करना पड़ता है और कहां से लाइसेंस लेना पड़ता है; इस संबध में कुछ जानकारियां हैंरू सबसे पहले दिल्ली में नर्सिंग होम चलाने के लिए दिल्ली सरकार के डायरेक्टर जनरल ऑफ हेल्थ सर्विसेज से नर्सिंग होम एक्ट के तहत लाइसेंस लेना होता है। डीजीएचएस कार्यालय में पंजीकरण के लिए आवेदन करना होता है। इसके बाद डीजीएचएस कार्यालय की ओर से नर्सिंग होम बिल्डिंग का निरीक्षण किया जाता है; यदि बिल्डिंग नियमों के तहत सही पाई जाती है, तो नर्सिंग होम चलाने का लाइसेंस दिया जाता है। दिल्ली का मास्टर प्लान 2021 के तहत जांच की जाती है कि उस रेजिडेंशियल एरिया, जहां सड़क की चौड़ाई 9 मीटर या उससे अधिक हो, में क्या नर्सिंग होम या अस्पताल चलाने के लिए स्वीकृति दी जा सकती है। दूसरा, दिल्ली के फायर एक्ट के तहत फायर विभाग से नर्सिंग होम या अस्पताल चलाने के लिए एनओसी तब लेनी होती है, जब उस बिल्डिंग की ऊंचाई नौ मीटर से ज्यादा हो। बिल्डिंग की ऊंचाई नौ मीटर या उससे कम हो, तब एनओसी की जरूरत नहीं होती। तीसरा, चाइल्ड बेबी केयर सेंटर के लिए अलग से परमिशन की जरूरत नहीं पड़ती। उसे नर्सिंग होम के तहत ही पंजीकृत कराकर लाइसेंस लेकर चलाया जा सकता है। डीजीएचएस के जरिए ही बेबी केयर सेंटर को भी नर्सिंग होम एक्ट में पंजीकृत कर सकते हैं। बेबी केयर सेंटर चलाने के लिए प्रशिक्षित पीडियाट्रिशियन, स्पेशलिस्ट डॉक्टर और प्रशिक्षित नर्स की जरूरत होती है। डीजीएचएस द्वारा किसी भी नर्सिंग होम या अस्पताल को पहली बार तीन साल के लिए लाइसेंस दिया जाता है। लाइसेंस का समय खत्म होने से दो महीने पहले रिन्यूअल के लिए आवेदन करना चाहिए। इस बीच रिन्यूअल की अवधि समाप्त हो रही हो तो तब तक इंतजार करना चाहिए,जब तक डीजीएचएस से कोई सूचना नहीं आ जाती। लेकिन जब तक रिन्यूअल के लिए भेजे गए आवेदन को रिजेक्ट नहीं किया जाता, तब तक अस्पताल और नर्सिंग होम संचालक अस्पताल चला सकता है। पंजीकरण या लाइसेंस अस्वीकृत होने के बाद ही उसको बंद किया जा सकता है। यदि डीजीएचएस कार्यालय देरी कर रहा है, तो विलंब की बाबत पूछताछ की जा सकती है। दिल्ली नगर निगम या एनडीएमसी के नक्शे के हिसाब से ही बिल्डिंग बनानी पड़ती है। इस नक्शे और बिल्डिंग को देख कर ही डीजीएचएस की ओर से लाइसेंस दिया जाता है। उसके बाद ही नगर निगम या एनडीएमसी उस बिल्डिंग से हाउस टैक्स लेता है। नर्सिंग होम एक्ट के अनुसार 100 वर्ग मीटर के किसी भी प्लाट पर बनी बिल्डिंग में अस्पताल संचालित कर सकते हैं। भारत में अस्पताल स्थापित करने के लिए नैदानिक स्थापना अधिनियम, 2017 के तहत पंजीकरण की व्यवस्था की गई है। यह केंद्र सरकार द्वारा अधिनियमित किया गया है। इसके लिए पंजीकरण की आवश्यकता होती है। पंजीकरण राज्य सरकार द्वारा किया जाता है। पंजीकरण के लिए अस्पतालों को उस श्रेणी के तहत न्यूनतम आवश्यकता पूरी करनी होती है, जिसके अंर्तगत वह आता है। कंपनी अधिनियम, 2013 के तहत पंजीकरण में जब अस्पताल ने इसे किसी निगम/कॉरपोरेट के स्वामित्व में स्थापित किया हो। अधिनियम के लिए आवश्यक है कि निगम पंजीकृत हो और एसोसिएशन के ज्ञापन, लेख, पूंजी संरचना निर्माण, प्रतिभूतियों का आवंटन, खाता ऑडिट आदि जैसे निगमन की आवश्यकता को पूरा करता हो।

क्या भारत कभी विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन पाएगा?

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एवं इतिहासकार एंग्स मेडिसिन के अनुसार वर्ष 1820 तक भारत विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था था, 1820 आते आते चीन भारत से आगे निकल गया था। 1820 से 1870 के बीच चीन एवं भारत विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में पूरे विश्व में सबसे आगे थे। वर्ष 1870 से 1900 के बीच ब्रिटेन विश्व की सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बन गया परंतु ब्रिटेन पर यह ताज अधिक समय तक नहीं टिक सका क्योंकि इसके तुरंत बाद अमेरिका विश्व में सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बन गया था। इसके बाद तो आर्थिक प्रगति के मामले में अमेरिका एवं यूरोपीयन देश लगातार आगे बढ़ते रहे, विकसित अर्थव्यवस्थाएं बने और एशिया के देशों (विशेष रूप से भारत एवं चीन) का वर्चस्व वैश्विक अर्थव्यवस्था में लगभग समाप्त सा हो गया था। परंतु, अब एक बार पुनः समय चक्र बदल रहा है एवं अमेरिका एवं यूरोपीयन देशों की अर्थव्यस्थाएं आर्थिक विकास के मामले में ढलान पर दिखाई दे रही हैं एवं एशिया के देश, विशेष रूप से भारत एवं चीन, पुनः तेज गति से आर्थिक प्रगति करते हुए वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपना दबदबा कायम करते नजर आ रहे हैं। आज अमेरिकी अर्थव्यस्था का आकार लगभग 25 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का है और चीन की अर्थव्यवस्था का आकार लगभग 18 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का है। ऐसी सम्भावना व्यक्त की जा रही है कि वर्ष 2035 से 2040 के बीच चीन विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा एवं अमेरिका दूसरे नम्बर पर आ जाएगा और भारत तीसरे नम्बर पर आ जाएगा। परंतु, इसके बाद क्या भारत अमेरिकी अर्थव्यवस्था को पीछे छोड़ते हुए दूसरे नम्बर पर आ पाएगा। इस तरह की चर्चाएं आजकल आर्थिक जगत में होने लगी हैं। आज से लगभग 10 वर्ष पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था का विश्व में 11वां स्थान था जो आज 3.70 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के सकल घरेलू उत्पाद के आकार के साथ विश्व में 5वें स्थान पर आ गई है। ऐसी सम्भावना व्यक्त की जा रही है कि वर्ष 2026 में भारतीय अर्थव्यवस्था जर्मनी अर्थव्यवस्था से आगे निकलकर विश्व में चौथे स्थान पर आ जाएगी। इसी प्रकार वर्ष 2027 में जापानी अर्थव्यवस्था को भी पीछे छोड़ते हुए भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व में तीसरे स्थान पर आ जाएगी। गोल्ड्मन सच्स के अनुसार, अगले चार वर्षों के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार 5 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक हो जाएगा। इसी प्रकार, ब्लूम्बर्ग के अनुसार, भारतीय अर्थव्यवस्था आगामी वर्षों में लगातार 6 प्रतिशत से अधिक की विकास दर हासिल करता रहेगा, और अमेरिका एवं चीन की आर्थिक विकास दर से आगे बना रहेगा। भारतीय अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास दर के तेज गति से आगे रहने के पीछे जो कारण बताए जा रहे हैं उनमें शामिल हैं – भारतीय जनसंख्या में वृद्धि होते रहना (अमेरिका एवं चीन में जनसंख्या वृद्धि दर लगातार कम हो रही है), इससे भारतीय घरेलू बाजार मजबूत बना रहेगा एवं उत्पादों की मांग भी भारत में तेज गति से आगे बढ़ती रहेगी। एक अनुमान के अनुसार, वर्ष 2050 तक भारत की आबादी बढ़ कर 170 करोड़ नागरिकों की हो जाएगी, इससे भारत अपने आप में विश्व का सबसे बड़ा बाजार बन जाएगा। वर्ष 2024 में भारत में उपभोक्ता विश्वास सूचकांक 98.5 प्रतिशत तक पहुंच गया है। दूसरे, भारत में आधारभूत ढांचे को विकसित करने के लिए भी केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा अत्यधिक मात्रा में पूंजी निवेश किया जा रहा है। भारत में आधारभूत ढांचे को विकसित श्रेणी में लाने के लिए केवल रोड ही नहीं बल्कि रेलवे, एयरपोर्ट, ऊर्जा एवं जल व्यवस्था को विकसित करने के लिए भी भरपूर पूंजी निवेश किया जा रहा है। भारत में आज भी श्रमिक लागत तुलनात्मक रूप से बहुत कम है, इससे कई विदेशी कम्पनियां अब चीन के स्थान पर भारत में अपनी विनिर्माण इकाईयों को स्थापित कर रही हैं इससे भारत के औद्योगिक विकास को गति मिल रही है। भारत ने भी कई उद्योग क्षेत्रों के लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना लागू की है जिसका लाभ विश्व की कई बहुराष्ट्रीय कम्पनियां उठा रही हैं एवं अपनी औद्योगिक इकाईयां भारत में स्थापित कर रही हैं। तीसरे भारत में आज 140 करोड़ की जनसंख्या में से 100 करोड़ से अधिक नागरिक युवा एवं कार्य कर सकने वाले नागरिकों की श्रेणी में शामिल हैं। इतनी बड़ी मात्रा में श्रमिकों की उपलब्धि किसी भी अन्य देश में नहीं है। अन्य विकसित देशों, चीन सहित, में कार्य कर सकने वाले नागरिकों की संख्या लगातार कम हो रही है क्योंकि इन देशों में प्रौढ़ नागरिकों की संख्या लगातार बढ़ रही है। किसी भी देश में युवा जनसंख्या का अधिक होने से न केवल श्रमिक के रूप में इनकी उपलब्धि आसान बनी रहती है बल्कि इनके माध्यम से देश में उत्पादों की मांग में भी वृद्धि दर्ज होती है तथा युवा जनसंख्या की उत्पादकता भी अधिक होती है जिससे उत्पादन लागत कम हो सकती है। साथ ही, युवाओं द्वारा नवाचार भी अधिक मात्रा में किया जा सकता है। यह सब कारण हैं जो भारतीय अर्थव्यवस्था को पूरे विश्व में एक चमकता सितारा बनाने में सहायक हो रहे हैं। हाल ही के समय में वैश्विक स्तर पर आर्थिक क्षेत्र का परिदृश्य तेजी से बदला भी है। अभी तक वैश्विक अर्थव्यवस्था में विकसित देशों का दबदबा बना रहता आया है। परंतु, अब अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2024 में भारत सहित एशियाई देशों के वैश्विक अर्थव्यवस्था में 60 प्रतिशत का योगदान होने की प्रबल सम्भावना बन रही है। एशियाई देशों में चीन एवं भारत मुख्य भूमिकाएं निभाते नजर आ रहे हैं। प्राचीन काल में वैश्विक अर्थव्यस्था में भारत का योगदान लगभग 32 प्रतिशत से भी अधिक रहता आया है। वर्ष 1947 में जब भारत ने राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त की थी उस समय वैश्विक अर्थव्यस्था में भारत का योगदान लगभग 3 प्रतिशत तक नीचे पहुंच गया था क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था को पहिले अरब से आए आक्राताओं एवं बाद में अंग्रेजों ने बहुत नुक्सान पहुंचाया था एवं भारत को जमकर लूटा था। वर्ष 1947 के बाद के लगभग 70 वर्षों में भी वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारतीय अर्थव्यवस्था के योगदान में कुछ बहुत अधिक परिवर्तन नहीं आ पाया था। परंतु, पिछले 10 वर्षों के दौरान देश में लगातार मजबूत होते लोकतंत्र के चलते एवं आर्थिक क्षेत्र में लिए गए कई पारदर्शी निर्णयों के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था को तो जैसे पंख लग गए हैं। आज भारत इस स्थिति में पहुंच गया है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में वर्ष 2024 में अपने योगदान को लगभग 18 प्रतिशत के आसपास एवं एशिया के अन्य देशों यथा चीन, जापान एवं अन्य देशों के साथ मिलकर वैश्विक अर्थव्यवस्था में एशियाई देशों के योगदान को 60 प्रतिशत तक ले जाने में सफल होता दिखाई दे रहा है। भारत आज अमेरिका, चीन, जर्मनी एवं जापान के बाद विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। साथ ही, भारत आज पूरे विश्व में सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था है। वित्तीय वर्ष 2023–24 में तो भारत की आर्थिक विकास दर 8.2 प्रतिशत की रही है और यह वित्तीय वर्ष 2023–24 की समस्त तिमाहियों में लगातार तेज गति से बढ़ती रही है। पहली तीन तिमाहियों में भारत की आर्थिक विकास दर 8 प्रतिशत से अधिक रही है, अक्टोबर–दिसम्बर 2023 को समाप्त तिमाही में तो आर्थिक विकास दर 8.4 प्रतिशत की रही है। इस विकास दर के साथ भारत के वर्ष 2025 तक जापान की अर्थव्यवस्था को पीछे छोड़ते हुए विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाने की प्रबल सम्भावना बनती दिखाई दे रही है।

2027 के लिए सपा के पीडीए के खिलाफ भाजपा अलर्ट मोड में

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में मिली शानदार और यादगार जीत के बाद समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव के हौसले पूरी तरह से बुलंदी पर हैं। अब एक और नया अध्याय लिखते हुए लोकसभा चुनाव की सफलता 2027 में होने वाले उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव में भी दोहराना चाहते हैं। 2024 के आम चुनाव में जहां उनके समाने मुख्य रूप से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी चेहरा थे तो वहीं 2027 में उनका मुकाबला तेजतर्रार नेता और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से होगा। मोदी की तरह योगी को भी परास्त करने के लिये समाजवादी पार्टी पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक (पीडीए) पर ही दांव लगायेगी,लेकिन उसको मुद्दे बदलने पड़ेगें। योगी से मुकाबला करते समय अखिलेश संविधान बदलने और आरक्षण खत्म करने की सियासत को अमलीजाना नहीं पहना पायेंगे। क्योंकि की यह मुद्दे केन्द्र के अधीन आते हैं। लॉ एंड आर्डर के मामले पर भी वह योगी सरकार को नहीं घेर पायेंगे। ऐसे में उनके पास अगड़े–पिछड़ें और दलित की राजनीति ही शेष बचेगी। परंतु बीजेपी कहती है कि काठ की हांडी बार–बार नहीं चढ़ती है। बीजेपी ने अभी से दलितों और पिछड़ों को साधना शुरू भी कर दिया है। मोदी सरकार के तीसरी बार शपथ ग्रहण के साथ इस खाई को पाटने का काम शुरू भी हो गया है।यूपी में बीजेपी को इस बार सीटें भले ही कम मिली,परंतु मोदी मंत्रिमंडल में यूपी के सांसद जगह बनाने में कुछ ज्यादा ही कामयाब रहे। यूपी से जिन सांसदों को मंत्री बनाया गया ,उनमें से कई पिछड़े और दलित समाज से आते हैं, जिनके सहारे बीजेपी प्रदेश में एक बार फिर से सामाजिक समीकरण अपने पक्ष में करने के प्रयास में है। मंत्रिमंडल में जातीय भागीदारी बनाए रखी गई है। पिछली बार के तीन की बजाए इस बार सिर्फ दो दलित चेहरों को जगह दी गई है। इनमें धनगर जाति के डॉ, एसपी सिंह बघेल को फिर से रिपीट किया गया है। तो पासी जाति से आने वाले कौशल किशोर की जगह कमलेश पासवान को जगह दी गई है। कुर्मियों में फिर से अनुप्रिया पटेल और पंकज चौधरी को रिपीट किया गया है। तो लोध चेहरे के तौर पर बीएल वर्मा को दोबार मंत्री बनाया गया है। हालांकि उन्नाव से तीन बार और सात बार सांसद रह चुके साक्षी महाराज को लोध चेहरे के रूप में जगह नहीं दी गई है। इसके अलावा क्षत्रियों की नाराजगी को देखते हुए इस बार भी इस बिरदारी के राजनाथ सिंह और कीर्तिवर्धन सिंह को जगह दी गई है। बहरहाल, लोकसभा चुनाव में पीडए के जरिए सामजिक समीकरण साध ऐतिहासिक जीत दर्ज करने के बाद सपा मुखिया अखिलेश यादव जमीन पर केमिस्ट्री ठीक करने की रणनीति में जुट गए है। 2027 के विधानसभा चुनाव के पहले अखिलेश की सबसे अधिक नजर पार्टी की अवधारणा बदलने पर है, जिससे साथ आए वोटरों को सहेजा और नए वोटरों को जोड़ा जा सके। यही वजह है कि अखिलेश अपने नेताओं और कार्यकर्ताओं को संयम, संवाद और कनेक्ट की सीख हर बैठक में दे रहे है। सपा के हिस्से में दस साल के बाद इतनी बड़ी जीत आई है। 2022 के विधानसभा चुनाव में सपा को पहली बार 32 प्रतिशत से अधिक वोट मिले थे। 2.95 करोड़ से अधिक वोटरों ने ईवीएम पर साइकिल का बटन दबाया था। 2024 के लोकसभा चुनाव में सपा को कांग्रेस का साथ मिला, लेकिन तब साथ लड़े रालोद, सुभासपा, अपना दल सहित कुछ और छोटे दलों ने साथ छोड़ दिया। बावजूद इसके अखिलेश अपनी वोट की पूरी पूंजी बरकरार रखने में सफल रहे। बसपा के साथ ही भाजपा कके कोर वोटों में सेंध लगाकर सपा ने विधानसभा चुनाव की अपेक्षा 1 प्रतिशत वोटों की बढ़त बनाते हुए 33,59 प्रतिशत वोट हासिल किए हैं। पार्टी को एक फिर 2.95 करोड़ से अधिक वोट हासिल हुए है। अपने दम पर ही सपा 45 प्रतिशत से अधिक विधानसभा क्षेत्रों में आगे रही है। इसलिए 2027 की तैयारियों को लेकर उम्मीद और हौसला दोनों ही सपा को मिला है। सपा प्रमुख अखिलेश ने जीत के बाद कार्यकर्ताओं से मुलाकात व सांसदों से संवाद में जमीन से कनेक्ट रहने के साथ सतर्कता की नसीहत भी दी है। यह नसीहत व्यवहार, भाषा से लेकर सार्वजनिक आचरण तक ये जुड़ी हुई है। दरअसल, भाजपा की कई सीटों पर पिछड़ने की एक वजह उसके सांसदों का घमंडिया व्यवहार और जनता से उनकी दूरी थी। अखिलेश इस बीमारी को अपनी पार्टी में नहीं पनपन देना चाहते। सोशल मीडिया के दौर में हर वायरल विडियो–ऑडियों भी पार्टी व प्रत्याशी का परसेप्शन बनाते–बिगाड़ते हैं। सपा ने सरकार और विपक्ष में रहते हुए इसका खूब नुकसान झेला है। 2012 में अखिलेश के सीएम की शपथ लेने के दौरान कार्यकर्ताओं के हंगामे से बनी अवधारणा न केवल सरकार में पार्टी के लिए मुसीबत बना था, बल्कि विधानसभा चुनाव में भी कानून–व्यवस्था को भाजपा ने सबसे बड़ा मुद्दा बनाकर बाजी पलट दी थी। 2022 के विधानसभा चुनाव में कार्यकर्ताओं और पार्टी के कोर वोटरों के अति उत्साह और प्रतिक्रिया कि चलते हुए सामाजिक ध्रुवीकरण का नुकसान उठाना पड़ा था। लोकसभा चुनाव के प्रचार के बीच भी अखिलेश ने कार्यकर्ताओं की ट्रेनिंग की बात कही थी। सपा के एक वरिष्ठ नेता के अुनसार सांसद, पदाधिकारी, कार्यकर्ता सबसे अखिलेश सर्तक रहने कह रहे है। जिससे पार्टी सरकार से जवाब मांगने की जगह अपनों को ही लेकर सवालों में न उलझे। इस बार के आम चुनाव में एक बात और खास हुई सपा प्रमुख ने मुस्लिम–यादव कोर वोटरों तक ही सीमित पार्टी के टैग को पीडए के प्रयोग से तोड़ दिया है। विधानसभा चुनाव में जहां गैर यादव ओबीसी वोट का विस्तार किया था, लोकसभा चुनाव में दलित वोटों में पार्टी ने खूब सेंध लगाई है। 1993 में बसपा के साथ हुए गठबंधन के बाद यह पहली बार है, जब सपा की ओर इतने बड़े पैमाने पर दलित वोट शिफ्ट हुए है। यहां तक कि 2019 में मायावती के साथ आने के बाद भी दलित वोटों में बिखराव के कयास लगे थे और नतीजे भाजपा के पक्ष में गए थे। लेकिन इस बार आरक्षण संविधान जैसे मसलों को उठाने के साथ ही भागीदारी बढ़कार अखिलेश दलित वोटरों को जोड़ने

में सफल रहे। अब पार्टी की सारी कवायद इस साथ को बरकरार रखने की है। इसलिए सड़क से सदन पार्टी उनसे जुड़े मुद्दों को आक्रामक ढंग से उठाने की रणनीति पर काम कर रही है। जमीन पर कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों को भी दलित समाज के नेताओं व समाज में प्रभावी लोगों से समन्वय ठीक रखने को कहा गया है। संगठन से लेकर सदन तक पार्टी के दलित समाज के चेहरे इस बार अधिक मुखर दिखेंगे, जिससे साथी स्थायी बन सके। खैर, यह तो सच है कि अखिलेश के पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) फार्मूले ने उत्तर प्रदेश में बड़ा काम किया। 37 सीटें जीतकर सपा प्रदेश में सबसे बड़ी पार्टी बन गई है। सपा पीडीए की जुटान को सामाजिक एकजुटता का सकारात्मक आंदोलन मान रही है। यही कारण है कि पार्टी पीडीए की एकजुटता व जोश वर्ष 2027 के विधानसभा चुनाव तक कम नहीं होने देना चाहती है। सपा 2027 को लक्ष्य बनाकर पीडीए को और धार देगी। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने संविधान, लोकतंत्र, आरक्षण, समता–समानता, सौहार्द की रक्षा जैसे मुद्दों पर भी लगातार भाजपा सरकार को घेरने की रणनीति बनाई है। पीडीए के सहारे इस बार सपा को सर्वाधिक 37 सीटों के साथ ही 33.59 प्रतिशत वोट मिले हैं। इससे पहले वर्ष 2004 में उसे सबसे अधिक 35 सीटें मिली थीं उस समय उसे मात्र 26.74 प्रतिशत ही मत मिले थे। वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में भी उसे 32 प्रतशित वोट मिले थे। इस बार सपा ने पीडीए के जरिए जातियों का ऐसा तानाबाना बुना जिसकी काट भाजपा भी नहीं कर पाई। वहीं बीजेपी के कुछ सूत्र यह मानने को तैयार नहीं है कि समाजवादी पार्टी को पीडीए के चलते इतनी बढ़ी कामयाबी मिली है।बल्कि इसके उलट बीजेपी के नेता कहते हैं कि अबकी से हम टिकट वितरण सही से नहीं कर पाये, जिसके खामियाजे के रूप में सपा के सिर जीत का सेहरा बंध गया। करीब ढाई दर्जन सांसदों के टिकट काटे जाने थे, सबको पता था कि जनता इनसे नाराज है, लेकिन पार्टी में बगावत या सामाजिक समीकरण खराब नहीं हो जायें, इसलिए सबको टिकट थमा दिया गया, जो बीजेपी के लिये आत्मघाती साबित हुआ।

कानपुर आईआईटी में बनेगा 500 बेड का अस्पताल, मेडिकल रिसर्च टेक्नोलॉजी में होंगे शोध कार्य

लखनऊ(संवाददाता) । आईआईटी कानपुर में बनने वाले 500 बेड के सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल और स्कूल ऑफ मेडिकल रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी (एसएमआरटी) को कैबिनेट ने हरी झंडी दे दी। मंगलवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में इस प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गई। प्रदेश सरकार और आईआईटी के बीच इस परियोजना के लिए कुछ समय पहले सहमति बनी थी। परियोजना के वित्त पोषण की उपलब्ध कराई गई मौजूदा स्थिति और कानपुर शहर में सुपर स्पेशियलिटी चिकित्सा संस्थान की स्थापना की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इस प्रस्ताव पर विचार किया गया। कैबिनेट ने यह भी तय किया कि सरकार द्वारा किया जाने वाला वित्त पोषण 50 करोड़ रुपये (05 वर्षों तक देय) एकल होगा। वित्तीय वर्ष 2024–25 से 10 करोड़ रुपये की धनराशि आगामी पांच वर्षों तक आईआईटी, कानपुर को देय होगी। 500 शैय्यायुक्त सुपर स्पेशियलिटी चिकित्सालय के साथ स्कूल ऑफ मेडिकल रिसर्च एण्ड टेक्नोलॉजी के संचालन व्यय का पूरा दायित्व आईआईटी कानपुर का होगा। इस अस्पताल के खुलने से डॉक्टर और इंजीनियर एक साथ शोध भी कर सकेंगे। इससे सस्ते मेडिकल उपकरण तैयार करने में भी मदद मिलेगी। आईआईटी कानपुर में खुलने वाले इस संस्थान के संचालन व रखरखाव के लिए गठित शासी निकाय में यूपी सरकार का एक सदस्य नामित होगा। यहां आयुष्मान भारत योजना के तहत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना एवं मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना में आने वाले लाभार्थियों को उपचार देना अनिवार्य होगा। आईआईटी, कानपुर में स्थापित होने वाले एसएमआरटी में आंकोलॉजी, कार्डियोलॉजी, कार्डियोवस्कुलर और थोरेसिक सर्जरी, न्यूरोलॉजी, न्यूरोसर्जरी, गैस्ट्रोएन्ट्रोलॉजी, सर्जिकल गैस्ट्रोएन्ट्रोलॉजी, नेफ्रोलॉजी और यूरोलॉजी सुपर स्पेशियलिटी पाठ्यक्रम भी संचालित किया जाना प्रस्तावित है।

अल्कोहल–बेस्ड से माउथवॉश करते हैं तो अलर्ट हो जाइए, बढ़ सकता है कैंसर का खतरा– स्टडी

आजकल अल्कोहल–बेस्ड माउथवॉश का इस्तेमाल बहुत ज्यादा बढ़ गया है. मुंह को जर्म्स फ्री

रखने और दांतों, मसूड़ों की सफाई और के लिए माउथवॉश का इस्तेमाल हो रहा है जो बेहद खतरनाक हो सकता है. एक स्टडी में सामने आया है कि अल्कोहल–बेस्ड माउथवॉश से कैंसर का खतरा है.

स्टडी में बताया गया है कि अल्कोहल–बेस्ड माउथवॉश ओरल माइक्रोबायोम यानी मुंह के बैक्टीरिया पर सीधा असर डाल सकते हैं. जिसकी वजह से पीरियडोंटल डिजीज और कैंसर का जोखिम बढ़ सकता है. बता दें कि ओरल माइक्रोबायोम पाचन में मददगार होता है और मुंह को हेल्दी रखने का काम करता है.

क्या कहती है स्टडी

जर्नल ऑफ मेडिकल माइक्रोबायोलॉजी में प्रकाशित रिसर्च में ऐसे पुरुषों को शामिल किया गया, जो पुरुषों के साथ यौन संबंध बनाते हैं. यौन बीमारियों से बचने के लिए वे हर दिन माउथवॉश का यूज करते हैं. बेल्जियम के एंटवर्प में इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन की टीम ने बताया कि अल्कोहल–बेस्ड माउथवॉश के 3 महीने तक नियमित इस्तेमाल से इन पुरुषों के मुंह में बैक्टीरिया फ्यूसो बैक्टीरियम न्यूक्लियेटम और स्ट्रेप्टोकोकस एंजिनोसस की संख्या बढ़ गई.

बैक्टीरिया बढ़ने से क्या होता है

मुंह में फ्यूसो बैक्टीरियम न्यूक्लियेटम और स्ट्रेप्टोकोकस एंजिनोसस दोनों बैक्टीरिया की संख्या बढ़ने से मसूड़ों की बीमारी बढ़ सकती है. इससे इसोफेजियल और कोलोरेक्टल कैंसर का रिस्क भी बढ़ता है. इतना ही नहीं इस स्टडी में शोधकर्ताओं ने ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करने के लिए जरूरी एक्टिनो बैक्टीरिया को भी घटते पाया है. मतलब इससे बीपी की समस्या भी बढ़ सकती है. कैंसर और ब्लड प्रेशर दोनों की समस्या जानलेवा हो सकती है.

जानिए हनुमान जी के किस स्वरूप की पूजा से मिलेगा कौन सा फल, पूरी होगी मनोकामना

सनातन धर्म में जितना महत्व पूजा–अर्चना का होता है, उतना ही महत्व दिन के हिसाब से देवी–देवताओं के पूजा का होता है। मंगलवार का दिन हनुमान जी को समर्पित है। मंगलवार के दिन जो भी भक्त हनुमान जी की पूजा करता है, उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी होती है। क्योंकि हनुमान जी अपने भक्तों के सभी कष्टों को हर लेते हैं। इसी चमत्कारी गुण के कारण बजरंगबली को संकट मोचन भी कहा जाता है।

हनुमान जी के तमाम स्वरूप हैं, जिनकी पूजा की जाती है। पवनपुत्र के इन अलग–अलग स्वरूपों की पूजा से अलग–अलग फल प्राप्त होता है। तो आइए जानते हैं कि हनुमान जी के इस स्वरूप की पूजा करने से क्या फल प्राप्त होता है।

पंचमुखी हनुमान

पंचमुखी हनुमान की पूजा करने से घर में आ रही विघ्न–बाधाओं से मुक्ति मिलती है। वहीं व्यक्ति के तरक्की के द्वार खुल जाएंगे। अगर आपको अपने घर में नकारात्मक शक्ति महसूस हो रही है, तो आप घर में पंचमुखी हनुमान की तस्वीर स्थापित कर पूजा–पाठ कर सकते हैं। इससे घर में नकारात्मक शक्ति नहीं प्रवेश करती है। रावण के पुत्र अहिरावण के वध के लिए हनुमान ने पंचमुखी स्वरूप धारण किया था।

वीर हनुमान

जो व्यक्ति हनुमान जी के वीर हनुमान स्वरूप की पूजा करता है, उसके बल, पराक्रम और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। इस स्वरूप की पूजा करने से व्यक्ति वीर, पराक्रमी होने के साथ ही काम में आ रही रुकावटों का अंत होता है।

एकादशी हनुमान

कालकारमुख नामक दैत्य का वध करने के लिए हनुमान ने श्रीराम की आज्ञा से एकादशी रूप धारण किया। हनुमान जी ने शनिवार के दिन कालकारमुख नामक दैत्य और उनकी सेना का वध कर दिया था। हनुमान जी के एकादशी स्वरूप की पूजा करने से सभी देवी–देवताओं की पूजा का फल मिलता है।

दास हनुमान

बता दें कि दास हनुमान का स्वरूप अक्सर तस्वीरों में दिखता है। इस तस्वीर में हनुमान श्रीराम के चरणों में हाथ जोड़कर बैठे हैं। अक्सर घर के मंदिर में इस तरह की प्रतिमाएं मिलती हैं। इस स्वरूप की पूजा करने से व्यक्ति में समर्पन और सेवा की भावना बढ़ती है। इस स्वरूप की पूजा करने से व्यक्ति हर कार्य में सफलता हासिल करता है।

रामभक्त हनुमान

हनुमान जी श्रीराम के अनन्य भक्त हैं और हमेशा उनकी भक्ति में लीन रहते हैं। ऐसे में हनुमान जी की श्रीराम की भक्ति करते हुए स्वरूप की पूजा करना शुभ होता है। हनुमान जी के इस स्वरूप में उनके हाथ में करताल दिखती है। जो भी व्यक्ति इस स्वरूप की पूजा करता है, वह अपने जीवन के हर लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर लेता है।

सूर्यमुखी हनुमान

धार्मिक शास्त्रों में सूर्यदेव को हनुमान जी का गुरु बताया गया है। ऐसे में यदि आप हनुमान जी के सूर्यमुखी स्वरूप की पूजा करते हैं, तो व्यक्ति को बुद्धि, ज्ञान, सम्मान और तरक्की मिलती है। बता दें कि सूर्यमुखी हनुमान को पूर्वमुखी हनुमान भी कहा जाता है।

6 जुलाई को इन राशियों को मिलेगा शुक्र का ऐश्वर्य, राजा की तरह होगा जीवन

ग्रह एक निश्चित अंतराल पर एक से दूसरी राशि में गोचर करते हैं। ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष षष्ठी तिथि 12 जून 2024 दिन बुधवार को 10 रू30 बजे के बाद प्रेम, सौंदर्य, आकर्षण, सौभाग्य, कला, सुख और साहित्य कारक ग्रह शुक्र का गोचर अपनी स्वराशि वृषभ से बुध की राशि मिथुन में होगा। मिथुन राशि में भी शुक्र देव अपना संपूर्ण प्रभाव देंगे। ज्योतिष के अनुसार, शुक्र का मिथुन राशि में गोचर करने से किसी भी क्रूर ग्रह की दृष्टि नहीं पड़ेगी। शुक्र अपना पूरा प्रभाव 6 जुलाई 2024 तक मिथुन राशि में रहकर प्रभाव स्थापित रहेगा। शुक्र का मिथुन राशि में गोचर करने से 12 राशियों पर क्या प्रभाव पड़ेगा। आइए जानते हैं।

मेष राशि

मेष राशि के जातकों का धनेश सप्तमेश होकर धन पराक्रम भाव में गोचर करेगा। परिणाम स्वरुप जीवनसाथी के सहयोग प्यार में वृद्धि होगी। प्रेम संबंधों में सुधार होगा। दैनिक फायदे हो सकते हैं। पार्टनरशिप के कार्यों से लाभ प्राप्त होगा। पारिवारिक कार्यों में प्रगति की स्थिति बन सकतीहै। अंदर डर रहने की संभावना रहेगी।

वृषभ राशि

लग्नेश एवं रोगेश होकर धन भाव में गोचर करेंगे। पारिवारिक कार्यों में वृद्धि होगी। वाणी व्यवसाय के क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए समय अनुकूल होगा। पेशाब संबंधित बीमारी हो सकती है। मनोबल बढ़ेगा। धन से संबंधित कार्यों में उन्नति होगी।

मिथुन राशि

मिथुन राशि के जातकों के लिए मानसिक खुशी प्रसन्नता में वृद्धि होगी। बौद्धिक क्षमता के आधार पर कार्यों में प्रगाति होगी। वैवाहिक जीवन और प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी। दैनिक आय में इजाफा होगा। भौतिक संसाधनों की प्राप्ति होगी।

कर्क राशि

लाभेश एवं सुखेश होकर व्यय भाव में गोचर आरंभ करेंगे। भोग विलासिता के खर्च में वृद्धि हो सकती है। खास व्यक्ति से तनाव की स्थिति बन सकती है। आर्थिक वृद्धि के लिए अधिक श्रम की आवश्यकता होगी। सुख के संसाधनों पर खर्च बढ़ेगा। माता के स्वास्थ्य को लेकर सतर्क रहें।

सिंह राशि

पराक्रमेश एवं राज्येश होकर लाभ भाव में स्वगृही गोचर करेगा। परिणाम स्वरुप आर्थिक स्थिति मजबूत बनेंगी। व्यापारिक गतिविधियों में सुधार होगा। नौकरी तथा व्यवसाय में परिवर्तन एवं प्रगति होगी। संतान पक्ष से कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। भाई–बहनों और मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा।

दिल्ली से महज 4 घंटे की दूरी पर है सबसे खूबसूरत हिलस्टेशन, यहां मौजूद है प्रसिद्ध तारा देवी का मंदिर

देश में इस समय भंयकर गर्मी पड़ रही है। गर्मी के प्रकोप से बचने के लिए ज्यादातर लोग हिल स्टेशन की तरफ रुख कर रहे हैं। अगर आप भी इस गर्मी से राहत पाने के लिए पहाड़ों पर घूमने की सोच रहे हैं, तो यह लेख सिर्फ आपके लिए है। दिल्ली से महज 4 घंटे की दूरी पर मौजूद है हिमाचल प्रदेश का सबसे खूबसूरत हिल स्टेशन। हिमाचल प्रदेश में छोटा, मगर एक खूबसूरत कस्बा है, जिसका नाम शोघी है।

शोघी की खासियत

शोघी शिमला से मात्र 13 किमी दूर स्थित है। इस हिल स्टेशन को सिटी आफ टेंपल भी कहा जाता है। यह जगह ताजे फलों के जूस के लिए काफी मशहूर है, इसके साथ ही यहां कदम–कदम पर मंदिर देखने को मिल जाएंगे। शोघी में 250 साल पुराने तारा देवी मंदिर के अलवाा यहां काली मंदिर, हनुमाम मंदिर, जाखू हिल और कंडाघाट है। यहां पर लोग घूमने के लिए फरवरी से लेकर जून तक आते हैं। दिल्ली से 370 किमी और चंडीगढ़ से सिर्फ 100 किमी दूर है, जहां बस की सेवा उपलब्ध है।

शिमला से बस इतना दूर है शोघी

शोघी का आकर्षण का प्रमुख केंद्र तारा देवी मंदिर है। यह लगभग 250 साल पुराने मंदिर में से एक है। यहां हर साल भक्तों का हुजूम देखने को मिल जाएगा। शिमला से लगभग 13 किलोमीटर पहले ही स्थित शोघी नेशनल हाइवे–22 के पास तकरीबन 5700 फीट की ऊंचाई पर ये मंदिर बसा है। यहां पर आप भीड़–भाड़ वाली जिंदगी से दूर घने जंगलों और ऊंची पर्वतों से घिरा शोघी हर पर्यटक की पहली पसंद है। यहां जाने के लिए आप दिल्ली से शिमला तक ट्रेन से जाएं, इसके बाद वहां से शोघी तक टैक्सी से जा सकते हैं।

राम प्रसाद बिस्मिल ने हिला दी थी अंग्रेजी हुकूमत की जड़ें

आज ही के दिन यानी की 11 जून को भारत माता के वीर सपूत और महान क्रांतिकारी राम

प्रसाद बिस्मिल का जन्म हुआ था। बिस्मिल ने अपना जीवन भारत माता के चरणों में न्योछावर कर दिया था। हालांकि उनका बचपन भी सामान्य तरीके से शुरू हुआ था। लेकिन उनके जीवन में बहुत सारे ऐसे लोग आए, जिससे बिस्मिल के जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आया। उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत को अपने आगे घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया था। तो आइए जानते हैं उनकी बर्थ एनिवर्सरी के मौके पर राम प्रसाद बिस्मिल के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और शिक्षा

उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर ब्राह्मण परिवार में 11 जून 1897 को राम प्रसाद बिस्मिल का जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम मुरलीधर था। जोकि शाहजहांपुर की नगरपालिका में कर्मचारी थे। उनकी मां का नाम मूलारानी था। सीमित आय के कारण बिस्मिल का बचपन सामान्य गुजरा था। वहीं बिस्मिल को पढ़ाई से ज्यादा खेल में रुचि थी। वह अपने शौक पूरे करने के लिए पैसे चुराते थे और उन्हें भांग और सिगरेट की लत लगी थी। ऐसे में उनके लक्षणों को देखकर किसी को उम्मीद नहीं थी कि वह क्या बनने वाले हैं। हालांकि स्कूल के दिनों में ही उनको किताबें और उपन्यास पढ़ने का चस्का लग गया था। इसी शौक को पूरा करने के लिए वह घर से पैसे चुराते थे। उन्होंने हिंदी और उर्दू में शुरूआती पढ़ाई पूरी की। लेकिन अंग्रेजी के कारण वह 10वीं की परीक्षा पास नहीं कर सके। ऐसे में उन्होंने अंग्रेजी सीखने की जिद ठान दी और पड़ोसी की संगत मिलने पर पूजापाठ में रम गए।

समय के साथ बदलते गए बिस्मिल

पड़ोस के पुजारी से मुलाकात के बाद राम प्रसाद बिस्मिल की पूजा–पाठ और ईश्वर के प्रति श्रद्धा जगी। इससे बचपन वाली सारी बुरी आदतें छूट गईं। वहीं उनका पढ़ाई में भी मन लगने लगा। मुंशी इंद्रजीत से मुलाकात के बाद उन्हें स्वामी दयानंद स्वरस्वती की लिखी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने का मौका मिला। इसे पढ़ने के बाद और स्वामी सोमदेव का सानिध्य मिलने से बिस्मिल में देशभक्ति की भावना प्रबल होने लगी।

राजनैतिक गतिविधियां

यहीं से बिस्मिल की राजनैतिक गतिविधियों में सक्रियता शुरू हुई और वह कई नेताओं और क्रांतिकारियों से मिले। वहीं राम प्रसाद बिस्मिल की ऊंची सोच और ज्ञान से हर कोई प्रभावित होता था। साल 1951 में गदर पार्टी के सदस्य भाई परमानंद की फांसी खबर राम प्रसाद बिस्मिल को अधिक भावुक कर दिया। जिसके बाद उन्होंने क्रांतिकारी की राह पकड़ ली। फिर वह कांग्रेस के नजदीक आए और उनको मोतीलाल नेहरु समेत कई नेताओं से मिलने का मौका मिला। असहयोग आंदोलन में बिस्मिल कांग्रेस के युवाओं के बीच काफी लोकप्रिय हुए। असहयोग आंदोलन बंद होने और क्रांतिकारियों की संगति बढ़ने से वह योगेश चन्द्र चटर्जी और शचीन्द्रनाथ सान्याल आदि साथियों के साथ हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन पार्टी का गठन हुआ। इसका संविधान राम प्रसाद बिस्मिल ने खुद लिखा था कि वह पूरी तरह से क्रांतिकारी बन गए।

फांसी

भारत की आजादी की लड़ाई में काकोरी कांड एक अहम घटना साबित हुई। काकारो कांड से अंग्रेजी सरकार को बड़ा झटका लगा था। इस कांड के नायक रहे रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान और रोशन सिंह को 19 दिसंबर 1927 को फांसी दे दी गई।

सारा अली खान के साथ कार्तिक आर्यन की ये तस्वीर वायरल, साथ–साथ दिखने का चंदू चौंपियन ने बताया सच

नई दिल्ली। हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में एक्टिंग के साथ–साथ अपने लुक्स को लेकर भी कार्तिक आर्यन चर्चा में बने रहते हैं। इन दिनों वह चंदू चौंपियन को लेकर लाइमलाइट में हैं। फिल्म रिलीज से एक दिन की दूरी पर है। कार्तिक इस मूवी से कितना इम्प्रेस कर पाए, ये तो कल ही पता लगेगा। फिलहाल वह एक बार फिर सारा अली खान और अपने रिलेशन को लेकर चर्चा का पात्र बन गए हैं। कार्तिक आर्यन की प्रोफेशनल लाइफ के साथ ही पर्सनल

लाइफ में भी उनके फैंस दिलचस्पी दिखाते हैं। उनका नाम वैसे तो कई अभिनेत्रियों के साथ जुड़ा है, लेकिन सारा अली खान के साथ उनके लिंकअप के रूमर्स ज्यादा ही रहे हैं। एक हालिया इंटरव्यू में सत्यप्रेम की कथा स्टार ने सारा के साथ अपने इक्वेशन पर चुप्पी तोड़ी है। पिछले साल गणपति पूजन से कार्तिक की सारा के साथ फोटो वायरल हुई थी। उनके साथ मनीष मल्होत्रा और उनकी बेटी राशा भी नजर आई थीं। इस फोटो ने बहुत लोगों का ध्यान खींचा था। अब कार्तिक ने उस तस्वीर पर चुप्पी तोड़ सारा के साथ दोबारा काम करने की इच्छा जाहिर की है। कार्तिक ने जूम से बातचीत में कहा, श्श्मैं इतना वोकल नहीं होता हूं इन सब चीजों में। उन्होंने आगे कहा कि काम के अलावा इस तरह की बातों को लेकर कोई भी आवाज हो, वह उससे खुद को दूर रखना ही पसंद करते हैं। वह इस तरह की बातों को फिजूल अटेंशन देना पसंद नहीं करते। कार्तिक ने इस बात पर हामी भरी कि अगर उन्हें कोई स्क्रिप्ट पसंद आती है और उसकी एक्ट्रेस सारा हों, तो वह जरूर उनके साथ दोबारा काम करना पसंद करेंगे। सारा और कार्तिक ने लव आजकल में स्क्रीन स्पेस शेयर किया था।

क्या आप जानते हैं रात को सोते समय एसी का तापमान कितना होना चाहिए? आज ही जानें यह बात

देश भर में भीषण गर्मी का कहर जारी है। आग उगलने वाली गर्मी से बचने के लिए लोग अलग–अलग तरह से उपाय आजमा रहे हैं। गर्मी के प्रकोप से बचने के लिए लोग नया एसी खरीद रहे हैं। इस भीषण गर्मी में पंखा और कूलर तो काम ही नहीं कर रहे। जिस वजह से लोग एसी खरीद रहे लेकिन आपको पता होना चाहिए कि आपके रुम का तापमाम आपकी नींद को सीधे तौर पर प्रभावित करता है। अगर आपके आस–पास काफी गर्मी है ऐसी स्थिति में नींद को सीधे तौर पर प्रभावित करता है। इस लेख में हम आपको बताएंगे कि रात के सोते समय एसी का तापमान कितना होना चाहिए।

एक्सपर्ट ने बताया कितना हो एसी का तापमान

एक्सपर्ट के अनुसार, रात को सोते समय एसी का आइडियल तापमान 20 सेल्सियस है। इस तापमाम पर नींद अच्छी आती है। वहीं अगर आप तापमान 20 डिग्री से कम करते हैं, तो ज्यादा ठंड की वजह से आपकी सेहत खराब हो सकती है।

बुजुर्गों के लिए हो इतना तापमान

बता दें, बुजुर्गों के लिए एसी का तापमान 24 डिग्री सेल्सियस सही रहता है। वयस्कों की तुलना में बुजुर्गों को ज्यादा ठंड लगती है। अगर 24 डिग्री से कम तापमान पर उनकी सेहत खराब हो सकती है। एसी से सुबह तक कमरे का तापमान काफी ज्यादा ठंडा हो जाता है।

एसी में सोने के फायदे और नुकसान

गर्मी के दौरान अगर आप एसी में सोते है, तो इससे डिहाइड्रेशन, हीट स्ट्रोक, थकान जैसी बीमारियों से बचा जा सकता है।

कॉमेडियन सुनील पाल ने सोनाक्षी सिन्हा पर उनकी शादी को लेकर कसा तंज, बोले– सोना तुमसे ये उम्मीद...

नई दिल्ली। बीते पिछले एक हफ्ते से सोनाक्षी सिन्हा अपनी शादी की खबरों को लेकर सुर्खियों में है। खबर है कि शत्रुघ्न सिन्हा की बेटी सोनीक्षी इस महीने 23 जून को जहीर इकबाल के साथ शादी करने वाली हैं। शादी की खबर के बाद से उनके फंक्शन को लेकर रोज कोई न कोई अपडेट आता रहता है। इस बीच हर कोई ये जानना चाहता है कि सोनाक्षी क्या वाकई शादी करने वाली हैं या ये सिर्फ एक अफवाह है। इस बारे में जब उनके पिता शत्रुघ्न सिन्हा से जब कुछ मीडिया वालों ने बात की तो उन्होंने ने कहा कि उन्हें इस बारे में कुछ नहीं पता है। अब इस बात पर कॉमेडियन सुनील पाल ने उनकी चुटकी ली है। सुनील पाल को उनके बेबाक अंदाज के लिए जाना जाता है। सुनील ने एक वीडियो शेयर करके सोनाक्षी पर तंज कसा है। वीडियो में सुनील पाल कहते हैं, ये शत्रुघ्न सिन्हा के लिए बड़ी दुखद खबर है। उन्होंने जिंदगी भर आज मेरे यार की शादी है गाना गाया। लेकिन उन्हें अपनी ही बेटी की शादी के बारे में नहीं पता है। सोना, तुमसे ये उम्मीद नहीं थी। अगर तुमने अपनी शादी में अपने पापा को बुलाया होता तो वो

जरूर आते। बता दें कि शत्रुघ्न सिन्हा से जब जूम टीवी ने सोनाक्षी का शादी को लेकर बात की थी तो वो इस खबर से बिल्कुल अंजान नजर आए। उन्होंने कहा, मैं अभी दिल्ली में हूं। इलेक्शन रिजल्ट अनाउंट होने के बाद मैं यहां आ गया था। मैं अपनी बेटी के प्लान के बारे में किसी से भी बात नहीं की है। अगर आप पूछ रहे हैं कि क्या वो शादी कर रही है? तो इसका जवाब ये है कि मुझे इस बारे में कुछ पता नहीं है। मैं भी उतना ही जानता हूं जितना मैंने मीडिया में पढ़ा है। अगर वो शादी की बात पर मुझे और अपनी मां को कॉन्फिडेंस में ले लेती है तो मैं और मेरी वाइफ उसे आशीर्वाद देने जरूर आएंगे। सोनाक्षी सिन्हा और जहीर इकबाल की मुलाकात सलमान खान की एक पार्टी के दौरान हुई थी। दोनों ने साथ में साल 2022 में आई फिल्म डबल एक्सल में भी काम किया है। इस फिल्म में सोनाक्षी और जहीर के अलावा हुमा कुरैशी और महत राघवेंद्र नजर आए थे।

नव निर्वाचित सांसद संजय पाटील का सम्मान

मुंबई। ईशान्य मुंबई से नव निर्वाचित सांसद संजय दीना पाटील का मुंबई के सामाजिक एवम राजनैतिक संगठनों द्वारा उनके भांडुप.प स्थित कार्यालय पर शाल एवम पुष्प गुच्छ प्रदान कर सत्कार किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता डॉ.बाबुलाल सिंह,महाराष्ट्र कांग्रेस उत्तरभारतीय सेल के उपाध्यक्ष अबु सुफियान अंसारी, महासचिव डॉ.सचिन सिंह, समता हॉकर्स युनियन मुंबई के अध्यक्ष शरीफ खान, महासचिव सलमा शेख, सचिव फिरोज अहमद खान, हृदय नारायण सिंह, परेश रामानी, साकिर अली ने सांसद संजय पाटील का सम्मान एवम अभिनंदन किया।

खुद से पूछे क्या मै जानकारी के अभाव की आड़ में बहाने तो नहीं बना रहा हूं

विकास के नियम के अनुसार कार्य करने में सब से बड़ी बाधा है टाल मटोल की आदत । खुद से पूछे क्या मै जानकारी के अभाव की आड़ में बहाने तो नहीं बना रहा हूं । जो नहीं जानते हैं उसे छोड़ दो ।

–आप काम आरम्भ कर दो । कुछ रहस्य तभी खुलते हैं जब हम काम करते है। आप लेखक बनना चाहते हैं, विचार नहीं आते । इसके लिये आप जो कुछ भी पढ़ते हैं, उसकी अच्छी बातें लिखना शुरू कर दो । जो कुछ भी दिमाग में आ रहा है उसे लिखो । मुरली या कहीं कोई प्रवचन सुनते हैं उसे लिखो । धीरे धीरे आप में लिखने की कला आ जायेंगी ।

–आप को योग लगाना नहीं आता । आप इसे सीखो और बैठ कर अभ्यास करो । जो जो विघ्न आते हैं उनके हल पुस्तकों में पढ़ो और वरिष्ट लोगों के अनुभव जानो । धीरे धीरे आप निरंतर योगी बन जायेगें ।

–इस संसार में कोई भी मनुष्य सब कुछ सीख कर पैदा नही होता ।

–जब जीवन में कोई हादसा होता है, अधिकतर लोगों का मनोबल टूट जाता है, विश्वास कमजोर हो जाता है ।

–इन हादसों के माध्यम से प्रकृति आप की नीद तोड़ना चाहती है । आप को जागृत करना चाहती है । पृथ्वी पर आप जो कार्य करने आये हैं, वह हो पायें यही इनका उदेश्य है ।

–कोई भी व्यक्ति एक सेब के अन्दर कितने बीज हैं गिन सकता है । सिर्फ ईश्वर ही एक बीज में स्थित सभी सेबो को गिन सकता है ।

–कुदरत आपके बारे में आप से ज्यादा जानती है कि आप का धरती पर आने का लक्ष्य क्या है । जब आप लक्ष्य से भटक रहे होते हैं तब वह हमारे सामने परिस्थितियां खड़ी करती है ।

–एक व्यक्ति को लिखने का शौक था परंतु नौकरी के कारण समय नही मिल रहा था। एक दिन छोटी सी बात पर उसे नौकरी से निकाल दिया। वह लिखने लगा तथा महान लेखक बना । नौकरी से निकालना प्रक्रति का संकेत था।

– एक विज्ञानी का मरने का समाचार गलती से छप गया ष्मौत का सौदागर विज्ञानी परलोक सिधाराष । दूसरे दिन विज्ञानी को अपने बारे यह पढ़ कर बुरा लगा कि वह मौत का समान बना रहा है लोग इस रुप में उसे याद कर रहे हैं । उसने नोबेल पुरस्कार की स्थापना की ताकि लोग उसे मानवता का हितैषी समझ कर याद करें । मृत्यु का समाचार एक इशारा था ।

सुनीता शेणॉय
बदलापुर

! !उजीना! !

मेवात , हरियाणा का एक जिला है जिसे अब नूंह जिले के नाम से जाना जाता है। पिछले वर्ष दंगों के कारण यह जिला काफी चर्चा में आया था। यह वही मेवात है जिसको मिनी पाकिस्तान कहा जाता है। शायद आप सब ने सुना भी होगा पर आप इस जिले के बारे में एक बात जो शायद नहीं जानते होंगे ,उसे आज जान लीजिए।

इसी मेवात जिले में एक गाँव है जिसका नाम है रुउजीना। आपकी जानकारी के लिए बता दूं कि जिस मेवात को मिनी पाकिस्तान कहा जाता है , उसी मेवात जिले के एक गॉव उजीना को मिनी इजराइल कहा जाता है।

चूंकि मेवात जिला पूरा का पूरा मुस्लिम बाहुल्य जिला है इसलिए जिस तरह इजरायल अपने चारों तरफ से दुश्मन देशों से घिरा हुआ है , मेवात का यह विशुद्ध हिंदू गॉव भी चारों तरफ से मुस्लिम लोगों से घिरा हुआ है।

इस गॉव की आबादी लगभग 15 हजार की है और यहां सारे के सारे लोग हिंदू हैं। जी हां , यहां के लोग सिर्फ हिंदू हैं , कोई ठाकुर, बनिया ,जाट या दलित नहीं। यहाँ के लोग अच्छी तरह समझते हैं कि मुस्लिमों के भाईचारे का मतलब क्या है ? इसलिए इस गाँव में एक भी मुस्लिम घर नहीं है। यहाँ सभी के सभी हिन्दू हैं , ऐसे हिन्दू जो जातीयता के बंधन से मुक्त है। इन्हें कभी जातीयता के किसी कीड़े ने काटा ही नहीं।

1947 के बाद से ही इस गॉव के लोग भाईचारा में भरोसा नहीं करते हैं। इस गाँव में सेकुलेर किस्म की कोई खरपतवार आज तक नहीं उगी है। कहते हैं कि 1992 के दंगों के समय उजीना गाँव के एक लड़के को उठा लिया गया था। उसके बाद वो लड़का कभी नहीं मिला। शायद मार दिया गया होगा लेकिन उस समय उजीना के जवानों ने अपनी उपस्थिति ऐसी दर्ज करवायी कि आज के दिन अगर कोई गलती से उजीना के बन्दे को उठा भी लेता है और जैसे ही उसे पता लग जाए कि यह बंदा उजीना का है तो वे उसे बाइज्जत वापस छोड़ देते हैं।

मतलब उजीना भौगोलिक रूप से तो इजराइल है ही , युद्ध शैली से भी इजराइल ही है। इस बात के लिए इस गाँव के लोगों को नमन।

सीख – यहां मात्र 15000 लोग हिन्दू हैं और वे सिर्फ हिन्दू हैं , अगड़ा पिछड़ा व दलित नहीं , इसीलिए इतने बड़े मेवात की हिम्मत नहीं है उनकी ओर आँख उठा कर देखने की। जरा सोचिए कि अगर सारे भारत में सिर्फ हिन्दू हों और वो भी सिर्फ हिन्दू , कोई भाई का चारा या सेकुलेर न हो तो पूरा देश ही उजीना होगा फिर दुनिया में किसकी मजाल जो हमारी ओर आंख उठाकर देखने के बारे में सोच भी सके चाहे वह चाइना हो या अमेरिका ??

पर दुरूख की बात है कि जब भी हिंदुओं को अपनी अस्मिता बचाने के लिए सिर्फ हिंदू बनने का आह्वान किया जाता है तो सामाजिक , आर्थिक व शैक्षिक मामले में पिछड़े दबे कुचले हिंदुओं को तो छोड़िए , सो कॉल्ड पढ़ी लिखी , ऊंची जाति के लोगों को सबसे पहले सेकुलरिज्म का कीड़ा काटने लगता है। सेकुलरिज्म का नशा उन पर ऐसा चढ़ता है कि उनके लिए देश से बढ़कर जाति हो जाती है , राष्ट्रीय सुरक्षा से बढ़कर जातिगत फायदे हो जाते हैं।

जब किसी ऊंची जाति के व्यक्ति के द्वारा देश हित में जाति बंधन तोड़कर सिर्फ हिन्दू बनने की बात की जाती है तो अजीब अजीब दलीलें व कुतर्क दिए जाते हैं। कहा जाता है कि जो लोग जात–पात हटाओ की वकालत करते हैं , वे पहले अपने बेटे – बेटी की शादी दलित व पिछड़ी जाति में करें तब जात पात मिटाओ का ज्ञान दें।

अरे भाई! शादी–व्याह और हिंदू स्मिता व राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे मुद्दों की कैसे कभी बराबरी की जा सकती है?? नमन है ऐसे अद्भुत विचार वाले लोगों को। इसलिए कहा जाता है कि हिंदुओं को या हमारे देश को खतरा मुसलमानों से नहीं है , हिंदुओं को खतरा इन सेकुलर लोगों से है जिनके कारण आज पूरे विश्व से हिंदू एक एक कर गायब हो रहे हैं और भारत भी अब इसी राह पर है। आपका क्या विचार है?

शिवनाथ बिहारी
साभार /मुकेश सनातनी

ज्ञान सरोवर
(हिन्दी साप्ताहिक)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पूजा प्रसाद पाण्डेय द्वारा नवभारत प्रेस लि. नवभारत भवन, प्लाट नं.13, सेक्टर–8, सानपाड़ा (पूर्व) नवी मुम्बई 400706 (एम.एस.) से मुद्रित तथा 11 गोकुलेश सोसायटी, पंडित मदन मोहन मालवीय रोड, मुलुण्ड (प.) मुम्बई 400080 (एम.एस.) से प्रकाशित।

सम्पादक

पूजा प्रसाद पाण्डेय

मो0– 9833567799

R.N.I.No.MAHHIN/2009/27377

Email: editor@gyansarovar.org
www.gyansarovar.org

समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों/लेखों में लेखकों तथा संवाददाताओं के अपने विचार हैं। किसी भी लेख/समाचार की जिम्मेदारी प्रकाशक/सम्पादक की नहीं होगी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय होगा।